DATE 31/07/19
PAGE No.

पाठ - 5

— उत्साह —
— अट नहीं रही है —

प्रश्न-उत्तर

⇒ उत्साह -

1. कवि बादल से फुहार, रिमझिम या बरसने के स्थान पर 'गरजने' के लिए कहता है, क्यों ?

उ० - कवि बादल से फुहार, रिमझिम या बरसने के स्थान पर 'गरजने' के लिए इसलिए कहता है, क्योंकि कवि बादलों को क्रांति का सूत्रधार मानता है। 'गरजना' विद्रोह का प्रतीक है। कवि बादलों से पौरुष दिखाने की कामना करता है। कवि ने बादलों के गरजने के माध्यम से कविता में नूतन विद्रोह का आह्वान किया है।

2. कविता का शीर्षक **उत्साह** क्यों रखा गया है?

उ० - कवि क्रांति लाने के लिए लोगों को उत्साहित करना चाहते हैं। बादलों में भीषण गति होती है। उसी से वह संसार के ताप हरता है। कवि ऐसी ही गति, भावना और शक्ति चाहता है। बादल का गरजना लोगों के मन में परिवर्तन करने का उत्साह भर देता है। इसलिए कविता का शीर्षक उत्साह रखा गया है।

DATE
PAGE No.

3. कविता में बादल किन-किन अर्थों की ओर संकेत करता है?

उ० उत्साह कविता में, बादल निम्नलिखित अर्थों की ओर संकेत करता है —

1- बादल जल बरसाने वाला शक्तिस्वरूप है।
2- बादल पीड़ित-प्यासे जन तथा धरती को शीतलता प्रदान करता है।
3- बादल गोपियों के मन में उत्साह भर के परिवर्तन लाने के लिए प्रेरित करता है।

4. शब्दों का ऐसा प्रयोग जिससे कविता के किसी खास भाव या दृश्य में ध्वन्यात्मक प्रभाव पैदा हो, नाद-सौन्दर्य कहलाता है। उत्साह कविता में ऐसे कौन-से शब्द हैं। जिनमें नाद-सौंदर्य है, छाटकर लिखिए।

उ० 1- "छेर छेर छोर गगन, धराधर ओ!
2- ललित ललित, काले घुघराले,
बाल कल्पना के-से पाले
3- "विद्युत-छवि उर में" कविता की इन पंक्तियों में नाद-सौन्दर्य मौजूद है।

⇒ अट नहीं रही है —

1. छायावाद की एक खास विशेषता है अंतर्मन को बाहर की दुनिया में सामंजस्य बिठाया। कवि ने किन पंक्तियों को पढ़कर यह धारणा पुष्ट हुई?

उ० - कविता के निम्नलिखित पंक्तियों को पढ़कर यह धारणा पुष्ट होती है कि प्रस्तुत कविता में अन्तर्मन के भाव

Shot on Y83 Pro
vivo dual camera

का बाहर की दुनिया सामंजस्य बिठाया गया है :

आभा फागुन की तन
सट नहीं रही है।
और
कहीं साँस लेते हो।
घर घर भर देते हो।
उड़ने को नभ में तुम,
पर पर कर देते हो।

ये पंक्तियाँ फागुन और मानव मन दोनों के लिए प्रयुक्त हुई हैं।

2. कवि की आँख फागुन की सुन्दरता से क्यों नहीं हट रही।

उ०- फागुन बहुत मतवाला, मस्त और शोभाशाली है। फागुन के महीने में प्राकृतिक सौंन्दर्य अपने चरम पर होता है। उसका रूप सौन्दर्य रंग-बिरंगे फूलों और हवाओं से प्रकट होता है। इसलिए आँखें फागुन की सुन्दरता से मंत्रमुग्ध हैं, जो चाह कर भी वहाँ से नहीं हटती।

3. कविता में प्रकृति की व्यापकता का वर्णन किन रूप में है।

उ०- प्रस्तुत कविता 'अट नहीं रही है' में कवि सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' जी ने फागुन के सर्वव्यापी और मादक रूप के प्रभाव को दर्शाया है। फागुन का सौन्दर्य असीम है। कवि ने उसे हर जगह छलकते हुए दिखाया है, जो घर-घर में फैला हुआ है। यहाँ 'घर-घर भर देते हो' में फूलों की शोभा की ओर संकेत है और मन में उठी खुशी की ओर भी। 'उड़ने को पर पर करना' भी ऐसा सांकेतिक प्रयोग है, जो पक्षिओं की उड़ान पर लागू होता है और मन के उमंग पर भी। सौन्दर्य से आँख न हटा पाना भी उसके विस्तार की झलक देता है।

4. फागुन अन्य ऋतुओं से भिन्न क्यों होता है?

उ० फागुन में सर्वत्र मादकता सुन्दरता छाई रहती है। प्राकृतिक शोभा अपने पूर्ण यौवन पर होती है। पेड़-पौधे नए पत्तों, फल-फलों से लद जाते हैं, हवा सुगन्धित हो उठती है। आकाश साफ-स्वच्छ होता है। पक्षियों के समूह आकाश में विहार करते दिखाई देते हैं

5. 'निराला' जी के काव्य-शिल्प की विशेषताएँ लिखिए।

उ०- महाकवि सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' जी छायावाद के प्रमुख कवि माने जाते हैं। छायावाद की प्रमुख विशेषताएँ हैं- प्रकृति चित्रण और प्राकृतिक उपदानों का मानवीकरण। 'उत्साह' और 'अट नहीं रही है' दोनों ही कविताओं में प्राकृतिक उपादनों का चित्रण और मानवीकरण हुआ है। छायावाद की अन्य विशेषताएँ जैसे, अलंकार, गेयता, प्रवाहमयता और संगीतात्मकता आदि भी विद्यमान है। 'निराला' जी की भाषा एक ओर जहाँ संस्कृतनिष्ठ, सामासिक है तो दूसरी ओर ठेठ ग्रामीण शब्दों का प्रयोग भी दर्शनीय है।

Shot on Y83 Pro
vivo dual camera